P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -V, ISSUE-II, November-2016

E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

नरसिंहपुर जनपद (म.प्र.) की भौगोलिक पृष्ठभूमि

माग्रेट यूसूफ
शोध छात्रा,
भूगोल विभाग,
सेन्ट जॉन्स कॉलेज
आगरा

सारांश

सर्वेक्षित नरसिंहपुर जनपद भारत के मध्य प्रदेश राज्य के मध्य भाग में स्थित है। इसकी स्थिति $22^{0}45'$ उत्तर और 23^{0} $15'$ उत्तरी अंक्षाश से $78^{0}38'$ पूर्व और $79^{0}38'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है मध्य प्रदेश के पुर्नगठन के समय 1 नवम्बर 1956 से यह जनपद अस्तित्व में आया है क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 5133 वर्ग कि.मी. है।

नरसिंहपुर जनपद का धरातलीय स्वरूप विविधता से युक्त है एवं इसका इतिहास समृद्धशाली एवं भूमि अत्याधिक उर्वरा युक्त है जिसके कारण इस जनपद का मुख्य क्षेत्र समतल एवं कृषि के योग्य है नरसिंहपुर जनपद के उत्तर में विन्ध्य पर्वत शृंखला एवं दक्षिणी भाग में सतपुड़ा की पहाड़ियों का फैलाव है तथा पूर्वी सीमा पर नर्मदा घाटी का क्षेत्र है जो पूर्णतः उपजाऊ है जो कृषि के लिए वरदान स्वरूप है।

जनपद की प्रमुख नदी नर्मदा नदी है एवं इसकी अनेक सहायक नदिया भी है जो नरसिंहपुर की कृषि को उच्च स्तर पर ले जाती है। इस क्षेत्र की जलवायु सामान्यतः शुष्क एवं ग्रीम ऋतु का छोड़ कर सामान्तयः पूर्ण जलवायु सुखद है जनपद को एक वर्ष में चार ऋतुओं का सामना करना पड़ता है। प्रथम शीत ऋतु द्वितीय ग्रीष्म ऋतु तृतीय मानसून चतुर्थ मानसून मौसम के अवसान नरसिंहपुर जनपद की मिट्टी अत्याधिक उपजाऊ है यहां जलोढ, सफेद रेतीली, काली, लाल मृतका आदि मिट्टी पाई जाती है इस क्षेत्र की मिट्टी की उपयुक्तता के कारण जनपद की कृषि का विकास एवं विस्तार विस्तृत हुआ है।

मुख्य शब्दः नरसिंहपुर, भौगोलिक पृष्ठभूमि, नर्मदाघाटी, भौतिक रचना, भू–वैज्ञानिक आधार नर्मदा नदी, जलवायु, भूगर्भशास्त्र सम्बन्धी पृष्ठभूमि, प्राकृतिक विस्तार, दक्कन ट्रेम्प, मध्य–प्रदेश, स्थलाकृतिक आधार, स्वाभाविक विस्तार, भौगोलिक दृष्टि से विस्तार भू–वैज्ञानिक आधार, सतपुड़ा, भूगर्भशास्त्र सम्बन्धी पृष्ठभूमि।

प्रस्तावना

जनपद की स्थिति एवं विस्तार

नरसिंहपुर जनपद भारत देश के मध्य प्रदेश राज्य का एक सबसे छोटा जनपद है, जो कि प्रदेश के मध्य भाग में स्थित है (जनपद के उत्तर में नर्मदा नदी पूर्व से पश्चिम की तरफ बहती है एवं जनपद के उत्तर में विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी एवं दक्षिण में सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है। नरसिंहपुर जनपद '22045′ उत्तर और 230 15′ उत्तरी अक्षांश तथा 78038′ पूर्वी और 490 38′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है।''[1] जनपद का आकार चतुष्टीयकोण है जो पूर्व से पश्चिम दिशा में लम्बाकार में फैला हुआ है।

उक्त जनपद की अत्यधिक लंबाई नर्मदा नदी के किनारे के साथ ''पूर्व से पश्चिम में लगभग 120.7 कि.मी. (75 मील) है जबकि उत्तर से दखिण की और यह केवल 64.5 कि.मी. (40 मील) है।''[2] जनपद की उत्तरी (चित्र संख्या) सीमा पर छिन्दवाड़ा एवं सिवनी जनपद की सीमाएं मिलती हैं। वस्तुतः जबलपुर जनपद इसके उत्तर–पूर्व में तथा सिवनी जनपद दक्षिण–पूर्व में स्थिति है और पूर्व में जनपद को परिवेषत करते है।

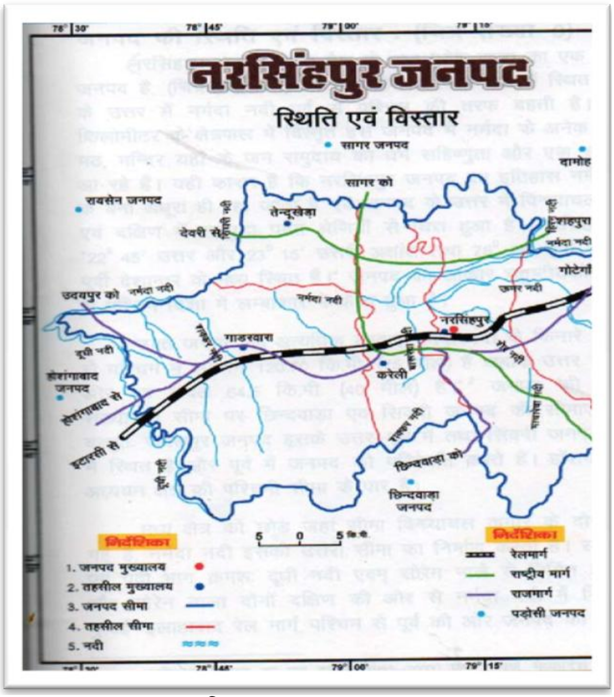

(चित्र संख्या–1)

मुम्बई–इलाहाबाद रेल मार्ग पश्चिम से पूर्व की ओर जनपद को पार करती है एवं निकटवर्ती मुख्य नगर 'जबलपुर' से 80.47 कि.मी. पश्चिम में स्थित है। नरसिंहपुर जनपद की समुद्र सतह से औसत ऊंचाई लगभग 346 मीटर से 377 मीटर है।''[3] इस जनपद का पूर्ववर्ती नाम छोटा छिन्दवाड़ा था, लेकिन नरसिंह मन्दिर के निर्माण के पश्चात् इस जनपद का वर्तमान नाम नरसिंहपुर पड़ा। इस जनपद का अस्तित्व 1 नवंबर, 1956 से मध्य प्रदेश में आया।

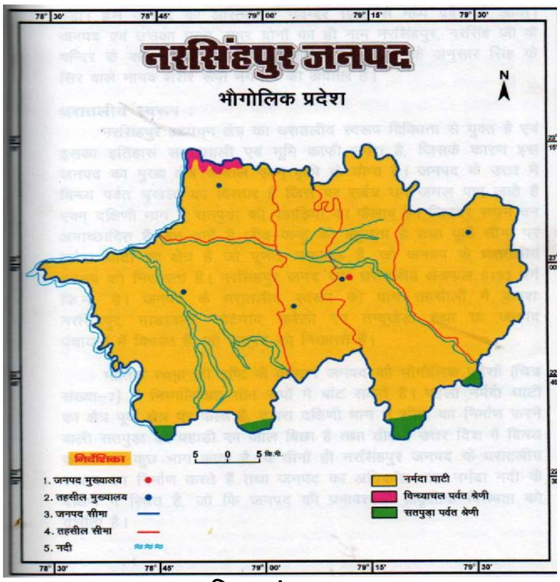

चित्र संख्या 2

धरातलीय स्वरूप

नरसिंहपुर अध्ययन क्षेत्र का धरातलीय स्वरूप विविधता से युक्त है एवं इसका इतिहास समृद्धशाली एवं भूमि काफी उर्वरा है, जिसके कारण इस जनपद का मुख्य क्षेत्र समतल एवं कृषि के योग्य है। जनपद के उत्तर में विन्ध्य पर्वत श्रृंखला का विस्तार है एवं दक्षिणी भाग में सतपुड़ा की पहाड़ियों का फैलाव है तथा पूर्वी सीमा पर नर्मदा घाटी का क्षेत्र है जो पूर्णतः उपजाऊ है, जो जनपद के धरातलीय स्वरूप को निखारता है। नरसिंहपुर जनपद का धरातलीय क्षेत्रफल 5133 वर्ग किमी है।

भौतिक रचना की दृष्टि से वर्तमान जनपद को भौगोलिक प्रदेशों (चित्र संख्या–2) में निम्नलिखित तीन रूपों में बाँट सकते हैं।

नर्मदा घाटी

नर्मदा घाटी की चौड़ाई जो कि उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर है लगभग 32.11 से 48.28 कि.मी. है। नर्मदा घाटी का सामान्य तल समुद्र के औसत तल से ''335.28 मीटर से 365.76 मीटर ऊचा है।''[4] इसका फैलाव पूर्व से पश्चिम की (चित्र संख्या–2) ओर जनपद में फैला हुआ है। जनपद का अत्यन्त उपजाऊ भाग नर्मदा नदी के प्रथम कछारी नदी क्षेत्र में स्थित है, उपजाऊ भूमि के कारण यहाँ पर घनी आबादी पाई जाती है।

सतपुड़ा पर्वत श्रेणी

सतपुड़ा पर्वत श्रेणी के उत्तरी ढाल जनपद के दक्षिणी में सम्पूर्ण लम्बाई में पफैला है, ये उत्तरी ढाल अधिकान्शतः प्राचीन बलुआ पत्थरों और स्लेटी पत्थरों से निर्मित है, जो गोण्डवाना काल के है। पहाड़ियों का पश्चिमी भाग काफी ऊँचा एवं विस्तृत पठारों का निर्माण करता है। इन पर्वत श्रेणियों की ऊंचाई उत्तर के ''मैदानी भागों में 304.80 मीटर है।''[5]

जनपद नरसिंहपुर की सबसे ऊंची पर्वत चोटी, ऊंचाखेड़ा चोटी है जो दूधी नदी के पूर्व में नरसिंहपुर छिन्दवाड़ा सीमा पर स्थित है। इसकी ऊंचाई समुद्र तल से 904.00 मीटर है। सतपुड़ा पहाड़ियां सघन वनों से अनाच्छादित है।

विन्ध्याचल श्रेणी

विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी, तेन्दूखेड़ा क्षेत्र में ''लगभग 19.31 कि.मी. चौड़ी (चित्र संख्या–2) घाटी के किनारे–किनारे फैला हुआ है। विन्ध्याचल पर्वत की श्रेणियां पश्चिम में 457.20 मीटर ऊँची हैं एवं पूर्व में लगभग 533. 40 मीटर ऊँचे दुर्गम पठारों का निर्माण करती है। जनपद के महत्वपूर्ण पर्वत शिखरों की ऊंचाई 651.05 मीटर और 660.50 मीटर है।''[6]

संरचना

सर्वेक्षित नरसिंहपुर जनपद भौतिक संरचना की दृष्टि से मध्य प्रदेश के मध्य उच्च भौतिक प्रदेश की (चित्र संख्या–3) नर्मदा घाटी के अन्तर्गत आता है। नर्मदा घाटी के उत्तर में मालवा का पठार, उत्तर पूर्व में विन्ध्य कगार प्रदेश, पूर्व में बुन्देलखण्ड प्रदेश दक्षिण में सतपुड़ा प्रदेश विस्तृत है।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -V, ISSUE-II, November-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

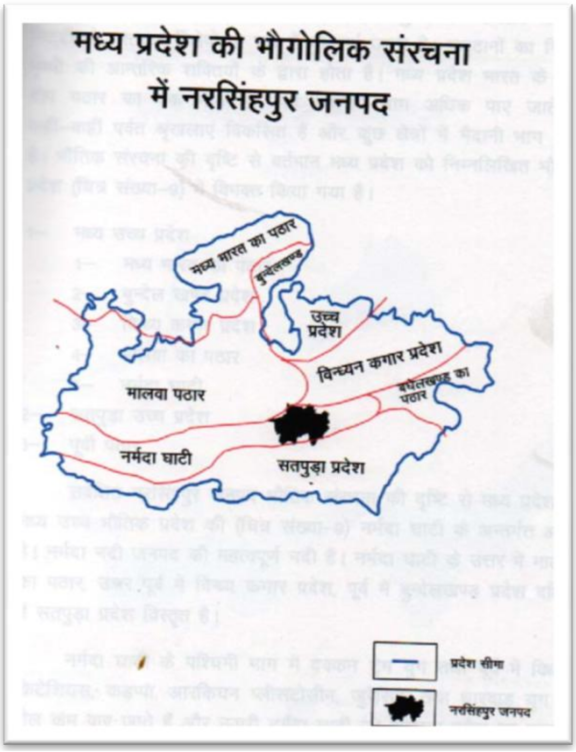

चित्र संख्या 3

नर्मदा घाटी के पश्चिमी भाग में दक्कन ट्रेम युग तथा पूर्व में विन्ध्यन क्रिटेशियस, कड़प्पा, आरकियन प्लीसटोसीन, जुरैसिक तथा धरवाड़ युग के शैल कम पाए जाते हैं और ऊपरी नर्मदा घाटी जो सतपुड़ा प्रदेश का भाग है, में अविभाजित रवेदार शैल समूह सौसठ सीरीज की चट्टानें मिलती हैं। तालिका संख्या–1.1 के अनुसार सर्वेक्षित क्षेत्र की शैल संरचना इस प्रकार है–

तालिका–1.1

नरसिंहपुर जनपद की शैल संरचना[7]

अभिनव	जलोढ़ मिट्टी
क्रिटेशिसन्इओसीन आदि नूतन	दक्षिण ट्रेप प्रवाह, डाइक और सिल
ऊपरी कार्बन युक्त	गोंडवाना रचना श्रृंखला
जुरासिक	विन्ध्यतंत्र
उत्तरवर्ती केम्बियन पूर्व	ग्रेनाइट और नाइस
आद्यकल्प	बीजावर श्रृंखला

सर्वेक्षित क्षेत्र की संरचना (चित्र संख्या–4) बीजावर श्रृंखला की चट्टाने, ग्रेनाइट और नाइस चट्टानें, कायान्त्रित चट्टान, पैगमेक्टाइट, विन्ध्यन चट्टान समूह, ऊपरी एवं निचली गोंडवाना कम की चट्टान और दक्कन ट्रेम्स आदि से ढकी है।

चित्र संख्या 4

उपवाह तन्त्र

नरसिंहपुर जनपद नदियों के मामले में अत्याधिक भाग्यशाली जनपद है। हीरापुर के उत्तर में विन्ध्य पठार के एक छोटे से भाग को छोड़ लगभग संपूर्ण जनपद अपवाह तंत्र से प्रवाहित है।

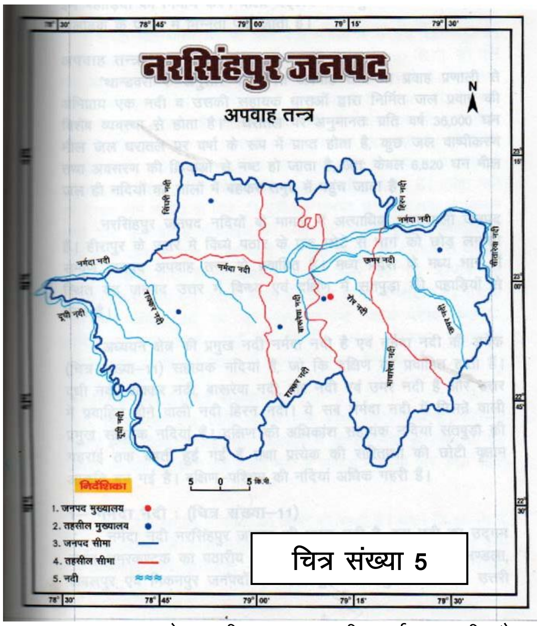

चित्र संख्या 5

अध्ययन क्षेत्र की प्रमुख नदी नर्मदा नदी है एवं नर्मदा नदी की अनेक (चित्र–संख्या–5) सहायक नदियां हैं, जो कि दक्षिण को प्रवाहित होती हैं। दूधी नदी, शक्कर नदी, बारूरेवा नदी, शेर नदी एवं उमर नदी हैं और उत्तर में प्रवाहित होने वाली नदी हिरन नदी। ये सब नर्मदा नदी में मिलने वाली प्रमुख सहायक नदियां है। दक्षिण की अधिकांश सहायक नदियां सतपुडा की गहराई तक बहती

हुई गई हैं तथा प्रत्येक की सरिताओं की छोटी वृक्षाम आकृति बन गई है। दक्षिण–पश्चिम की नदियां अधिक गहरी हैं।

नरसिंहपुर जनपद में नदी के प्रवाह एवं जल के अलावा लोग भूमिगत जल का प्रयोग करते हैं। भूमिगत जल को प्राप्त करने के लिए जनपद के निवासी झरनों, कुओं, नलकूपों आदि का प्रयोग करते हैं।

जलवायु

जलवायु एक भौगोलिक तत्त्व है, जिसका प्रभाव मानवीय क्रियाओं पर सर्वाधिक होता है। अनुकूल जलवायु ही संपूर्ण आर्थिक विकास का आधार है। मनुष्य के आवास, भोजन, वस्त्रों एवं कृषि विकास हेतु और अन्य आर्थिक क्रियाएं सभी जलवायु पर निर्भर करती है। जलवायु स्थिति, उच्चावचन प्राकृतिक वनस्पति, मृदा जलराशियों द्वारा प्रभावित होती है।

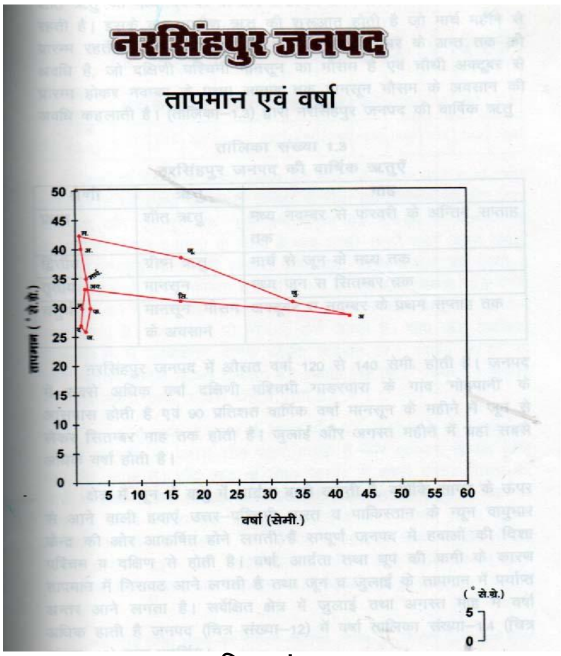

चित्र संख्या 6

नरसिंहपुर जनपद की जलवायु सामान्यतः शुष्क एवं ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर सामान्यतः पूर्ण जलवायु सुखद मानी जाती है। सर्वेखित क्षेत्र की जलवायु तालिका संख्या–1.2 द्वारा प्रदर्शित है–

तालिका संख्या–1.2
नरसिंहपुर जनपद की जलवायु

क्र.सं.		जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वार्षिक
1.	अधिकतम तापमान से.ग्रे.	26.8	30.3	35.3	40.3	42.5	38.1	31.4	29.7	31.9	33.5	30.7	27.3	3.2
2.	न्यूनतम तापमान से.ग्रे.	8.2	11.1	15.6	21.4	25.9	26.1	23.9	23.1	22.5	17.9	12.4	8.6	18.6
3.	अपेक्षित आर्द्रता प्रतिशत	74	64	50	40	39	66	85	90	84	70	70	76	67
4.	पवन	2.4	3	3.8	4.4	5.9	8	6.8	6	3.8	2.2	2.2	2	4.2
5.	वर्षा मि.मी.	1.1	17.3	12.1	6.2	7	168.9	334.8	423.6	160.8	23.5	14.3	12.6	119.21

जनपद को एक वर्ष में चार ऋतुओं का सामना करना पड़ता है। प्रथम शीत ऋतु जो मध्य नवम्बर से प्रारम्भ होकर फरवरी के अन्तिम सप्ताह तक रहती है। इसके बाद ग्रामीण ऋतु की शुरूआत होती है जो मार्च महीने से प्रारम्भ होती है। तीसरी ऋतु जून के मध्य से सितम्बर के अन्त तक की अवधि है, जो दक्षिणी पश्चिमी मानसून का मौसम है एवं चौथी अक्टूबर से प्रारम्भ होकर नवंबर के प्रथम सप्ताह तक मानसून मौसम के अवसान की अवधि कहलाती है। (तालिका–1.3) द्वारा नरसिंहपुर जनपद की वार्षिक ऋतु–

तालिका संख्या–1.3
नरसिंहपुर जनपद की वार्षिक ऋतुएं

श्रेणी	ऋतु	माह
प्रथम	शीत ऋतु	मध्य नवंबर से फरवरी के अंतिम सप्ताह तक।
द्वितीय	ग्रीष्म ऋतु	मार्च से जून के मध्य तक
तृतीय	मानसून	मध्य जून से सितम्बर तक
चतुर्थ	मानसून मौसम के अवसान	अक्टूबर से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -V, ISSUE-II, November-2016

E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

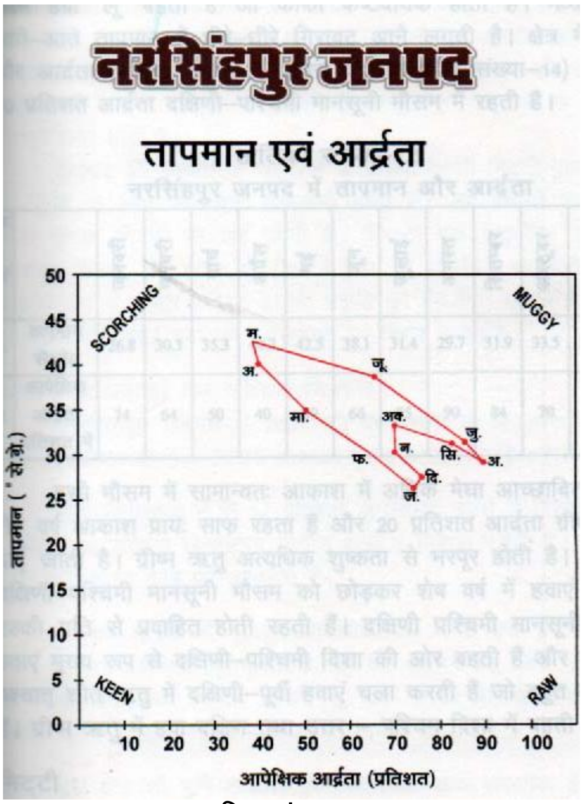

चित्र संख्या 7

मिट्टी

नरसिंहपुर जनपद की मिट्टी अत्यधिक उपजाऊ हैं एवं भिन्न–भिन्न स्थानों पर अलग–अलग प्रकार की मिट्टी पाई जाती है। नर्मदा नदी के बहाव के संग्रह से जो मिट्टी प्राप्त होती है वह अधिक उपजाऊ होती है। नदी द्वारा एकत्र की गई मिट्टी ही जलोढ़ मिट्टी कहलाती है। जलोढ़ मिट्टी जनपद में नर्मदा एवं उसकी सहायक नदियों के तट पर पाई जाती है। नरसिंहपुर जनपद के निकट जबलपुर की चट्टानों के कारण सफेद रेतीली मिट्टी भी बहुतायत से पाई जाती है। यह मिट्टी काफी छोटी–छोटी परतों में पाई जाती है। इस मिट्टी की मोटाई तीन मीटर तक होती है, मिट्टी रेतीली एवं अभ्रकीय होती है। यह मिट्टी तल्लैया, कोकरा पानी, हींग पानी, सोवरी, हरनाखुर की पहाड़ियों में पाई जाती है एवं सतपुड़ा की पहाड़ियों तथा अन्तः चट्टानों से भी रेतीली मिट्टी प्राप्त होती है।

जनपद की कायान्त्रित चट्टानों से बारीक काली मिट्टी प्राप्त होती है, जो कृषि के लिए अत्यधिक लाभकारी होती है। कई स्थानों पर अभ्रकीय, लाल मृतका मिट्टी भी पाई जाती है। "मिट्टी एक प्राकृतिक संसाधन है, जिसका निर्माण शैल क्षरण से होता है साथ ही प्राकृतिक वनस्पति, जलवायु, धरातल एवं भू–गर्भित बनावट इसकी प्रकृति को निर्धारित करती है। कृषि का विकास एवं विस्तार मृदा की उपयुक्तता पर निर्भर करता है।"[8]

उद्देश्य

इस शोधपत्र का प्रमुख उद्देश्य यह है कि नरसिंहपुर जनपद म.प्र. राज्य का छोटा जनपद (5133 वर्ग कि.मी.) है छोटा होने के कारण इस जनपद का अस्तित्व कम प्रभावी है इस कारण शोध का प्रमुख उद्देश्य यह है कि जनपद अन्य प्रसिद्ध जनपदो की भांति अस्तित्व में आए।

यह जनपद विध्याचल एवं सतपुड़ा की पर्वत श्रेणियों के मध्य नर्मदा की गोद में बसा कृषि प्रधान क्षेत्र है, नरसिंहपुर क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि अन्य क्षेत्रों से अत्यधिक उत्तम है जो कि कृषि के लिए लाभ प्रद है। इस लाभ से लोगों को अवगत करना भी ताकि नरसिंहपुर जनपद का आर्थिक स्तर उच्च बना रहे। यह भी उद्देश्य है।

निष्कर्ष

नरसिंहपुर जनपद के क्षेत्र अध्ययन से स्पष्टतः ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र का भौगोलिक स्वरूप अत्याधिक सुखद है जनपद की स्थिति एवं विस्तार, धरातलीय बनावट, संरचना जलवायु एवं मिट्टी मानव के अनुकूल है तथा कृषि के लिए लाभ प्रद। कृषि एवं भूमि का अटूट संबंध है क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि कृषि के लिए वरदान स्वरूप हो यहां का धरातलीय स्वरूप विविधता से युक्त है तथा इतिहास समृद्धशाली एवं भूमि अत्याधिक ऊर्वरा युक्त हैं जिसके कारण इस जनपद का मुख्य क्षेत्र समतल एवं कृषि योग्य है। जनपद की अनुकूल जलवायु ही क्षेत्र सम्पूर्ण क्षेत्र का अधिक विकास का आधार है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अवस्थी, नरेन्द्र, मोहन (2007) भौतिक भूगोल– लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन–मेरठ।
2. अग्रवाल एस.के. (1986) जिओइकॉलॉजी आफ मैलीन्यूट्रेशन स्टडी ऑपफ हरियाणा–चिलरना पब्लिकेशन–नई दिल्ली।
3. उपाध्याय, के.डी.(2001) ए. हैण्ड बुक ऑपफ एग्रिको अमन पब्लिकेशन हाऊस–मेरठ
4. एडवोकेट, मदनलाल जिन्दल (1993) मध्य प्रदेश सहकारी सोसायटी अधिनियम–राजकमल पब्लिकेशन
5. गौतम अलका– (2010) भारत का वृहद भूगोल, शरदा पुस्तक भवन– इलाहाबाद
6. गौतम अलका (2010) भौतिक भूगोल रस्तोगी पब्लिकेशन–मेरठ
7. चौहान बी.एस. (2006) भौतिक भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ।
8. जैन टी.आर. (2007) सटॅटिकल फॉर इकोनोमिक्स, वी.के. पब्लिकेशन– नई दिल्ली।
9. द्विवेदी प. सुरेश (2007) कृषक पत्रिका, त्रिवेदी कॉलोनी, गाडरवारा जिला–नरसिंहपुर
10. दूबे के.सी.– (981) जनगणना प्राथमिक सांराश, नरसिंहपुर जिला भाग–XIII, ख भारतीय प्रशासन सेवा निदेशक, जनगणना– मध्य प्रदेश
11. वंसल सुरेश चन्द्र– (2001) भारत का वृहद भूगोल, मिनाक्षी प्रकाशन–मेरठ।
12. बिष्ट डॉ. एस. (1990) एग्रीकलचर डेवलपमेन्ट इन इण्डिया, अनमोल पब्लिकेशन– नई दिल्ली।
13. भानु–डी.एस. (1990)– एग्रीकल्चर प्रोडक्टीविटी इन

इण्डिया, अनमोल पब्लिकेशन–नई दिल्ली
14. राय चन्द्र भानु (2001) नरसिंह नयन कर्मवीर प्रकाशन
15. राम कवार विश्वजीत (2005) जिला विकास पुस्तिका–नरसिंहपुर (म.प्र)
16. वाडिया डी.एन. (1953)– जियोजॉजी ऑफ इण्डिया–लन्दन।
17. श्रीवास्तव प्रेम नारायण– (1971) मध्य प्रदेश जिला गजेटियर– नरसिंहपुर म.प्र., भोपाल।
18. सिंह यू.बी.– (2000) जलवायु विज्ञान, राजीव प्रकाशन मेरठ।

पत्र–पत्रिकाएँ
1. आई इण्डिया (2001) ग्राफफिसेस।
2. चर्मण्वती भूगोल शोध पत्रिका (2004) बोलथूम–4 चर्मववती भूगोल परिषद, अम्बाद, मुरैना
3. जिला सांख्यिकी पुस्तिका (2007–1971) नरसिंहपुर
4. नरसिंहपुर गौरवमयी स्मारिका (1999) वार्षिक पत्रिका प्रयास भारतीय यूथ पफोरम, नरसिंहपुर
5. नरसिंहपुर विकास एक दशक 1993–2003
6. प्रयास पत्रिका–2001

समाचार पत्र
1. दैनिक जागरण
2. हरि भूमि
3. नरसिंह नयन
4. नवभारत
5. जागृति साहस

वेवसाइट
1. www.censusindianet
2. www.harsingpur.nic.in
3. http/harsingpur.nic.in/geography
4. www.gyandost.net.
5. www.Landrecord. mp gov.in
6. www.maps/madhypradesh/districts /narsingpur.

पादटिप्पणी
1. नरसिंहपुर विकास का एक दशक (1993–2003) जन संपर्क, मध्य प्रदेश जिला नरसिंहपुर एक परिचय,पृ. 3
2. मध्य प्रदेश जिला गजेटियर, लेखक– प्रेम नारायण श्रीवास्तव,अध्याय–1 नई दुनिया प्रेस, पृ. 1 इन्द्रौर–2, संस्करण–1972, सामान्य
3. नरसिंहपुर की गौरवमयी स्मारिका प्रयास (वार्षिक पत्रिाका) प्रधन साम्पादक रपफीक अहमद शाह,पृ. 33 भारतीय यूथ पफोरम, कन्दोली,नरसिंहपुर (म.प्र.) 1999
4. मध्य प्रदेश जिला गजेटियर, लेखक– प्रेम नारायण श्रीवास्तव, अध्याय–1 सामान्य नई दुनिया प्रेस, पृ. 4 इन्द्रौर–2, संस्करण–1982
5. मध्य प्रदेश जिला गजेटियर, लेखक– प्रेम नारायण श्रीवास्तव, अध्याय–1ःसामान्य, नई दुनिया प्रेस,पृ.4,5, इन्द्रौर–2, संस्करण–1982
6. मध्य प्रदेश जिला गजेटियर, लेखक– प्रेम नारायण श्रीवास्तव, अध्याय–1 : सामान्य, नई दुनिया प्रेस,पृ. 4 इन्दौर–2, संस्करण–1982
7. मध्य प्रदेश जिला गजेटियर,लेखक–प्रेम नारायण श्रीवास्तव, अध्याय–1ः सामान्य, नई दुनिया प्रेस,पृ.12 इन्दौर–2, संस्करण–1982
8. विश्व का कर प्रादेशिक भूगोल, लेखक–डॉ. हरिमोहन सक्सेना, अध्याय–3 जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति एवं मृदा, पृ. 27, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ, 2007